विदेशी शिविरार्थियों ने देखी तुलसी कला दीर्घा
वाऊ! वेरी ब्यूटीफुल आर्ट

लाडनूं 6 नवम्बर।

प्रेक्षा इन्टरनेशनल द्वारा आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान शिविर में भाग ले रहे विदेशी शिविरार्थियों ने तुलसी कला दीर्घा का अवलोकन किया। उन्होंने जब वहां प्रदर्शित आचार्य महाप्रज्ञ के शिष्य-शिष्याओं द्वारा निर्मित काष्ठकला के अद्भूत नमूने, हस्तनिर्मित सूत की मालाओं, प्राचीन ताड़पात्र सचित्र पाण्डुलिपियां, जीवन को दिशा देने वाले चित्रों को देखा तो खुशी से उछलते हुए कहने लगे वाऊ! वेरी ब्यूटीफूल आर्ट। विदेशी दल को मुनि कीर्तिकुमार, मुनि जयंतकुमार, मुनि विनीत कुमार, मुनि गौतमकुमार ने तुलसी कला प्रेक्षा में प्रदर्शित कला कृतियों के बारे में जानकारी दी। देश की प्राचीन संस्कृति, प्राच्य विद्या एवं विलक्षण कला को समेटे यह कला दीर्घा विदेशियों के लिए आकर्षण का केन्द्र रही। उनकी प्रत्येक कला को गहराई से जानने की उत्सुकता कलाओं की श्रेष्ठता सिद्ध कर रही थी। विदेशी दल ने जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय द्वारा संचालित वर्धमान ग्रंथागार में प्रदर्शित 60 हजार से भी ज्यादा पुस्तकों को देखकर आश्चर्य व्यक्त किया और उन्होंने ग्रंथागार को अखूट ज्ञान राशि को समेटना वाला ग्रंथागार बताया।

राष्ट्रीय अणुव्रत नैतिक गीत गायन प्रतियोगिता आज से

अणुव्रत न्यास दिल्ली द्वारा आयोजित अज़िल भारतीय अणुव्रत नैतिक गीत गायन प्रतियोगिता का शुभारंभ आचार्य महाप्रज्ञ एवं युवाचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में प्रात: 9.30 बजे सुधर्मा सभा में किया जायेगा। उक्त जानकारी देते हुए रमेश काण्डपाल ने कहा कि तीन दिन तक चलने वाली इस प्रतियोगिता में देश के सभी प्रांतों में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले विद्यालयों एवं एकल गीत गायन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के द्वारा प्रस्तुति दी जायेगी। इनमें जो प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वालों को न्यास की तरफ से पुरस्कार दिया जायेगा। काण्डपाल ने बताया कि इस प्रतियोगिता में कुछ विद्यार्थी एक ही अणुव्रत गीत को अपने द्वारा तैयार की गई धून के साथ प्रस्तुत करते हैं। विद्यार्थियों ने प्रस्तुति को देखकर ऐसा लगता है देश का संगीत के क्षेत्र में भविष्य उज्जवल है।

आचार्य महाप्रज्ञ के साहित्य से आया मेरे में बदलाव : मारिया

लाडनूं 6 नवम्बर।

प्रेक्षाध्यान के प्रणेता आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में चल रहे 8वें अन्तर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान शिविर में अनुवादक के तौर पर पीछले 5 सालों से भाग ले रही रशिया की माजुका मारिया ने बताया कि मैं आचार्य महाप्रज्ञ की पुस्तकों का अनुवाद कर रही हूं। उनके साहित्य को पढ़ने से मेरे जीवन में बदलाव आया है। उनके विचारों से रशिया के लोग लाभान्वित हो इसलिए मैंने अब तक ''वाई मेडिटेट'' तब होता है ध्यान का जन्म, 'कैसे सोचें' 'मिरर ऑन द सेल्फ' पुस्तकों का रशिया भाषा में अनुवाद किया है।

टूरिज्म क्षेत्र से जुड़ी मारिया ने कहा कि मैंने ध्यान के प्रयोग अनेक जगहों पर किये हैं, पर उन सबसे ज्यादा प्रेक्षाध्यान वैज्ञानिक एवं शक्तिशाली लगा। इसके अज़्यास से व्यक्ति अपने जीवन को तनावमुक्त बना सकता है और नई ऊर्जा पा सकता है। उन्होंने भारतीय संस्कृति और रश्यिन संस्कृति के संदर्भ में कहा कि यहां की संस्कृति रश्यिा से भिन्न है। रशिया परिवार को महत्त्व नहीं दिया जाता है। उन्होंने भारत के विकास में बाधक तत्त्वों पर ध्यान आकृष्ट करते हुए कहा कि भारत ने पीछले सालों में बहुत विकास किया है। पर भ्रष्टाचार के कारण जो गति होनी चाहिए वह नहीं है।

मारिया ने कहा कि मुझे भारत में एक व्यवस्था अच्छी नहीं लगी। जब मैं 18 साल की थी तब यहां आई थी। उस समय मुझे पहली बार लड़की होने का अहसास हुआ। रशिया में महिला-पुरुष में कोई भेद नहीं देखा जाता है। यहां पर पुरुष प्रमुख व्यवस्था है इसे मैं पसंद नहीं करती हूं। सब मानव हैं, इसलिए सबको समान दर्जा मिलना चाहिए। उन्होंने कहा कि मुझे हिन्दुस्तान के लोग बहुत अच्छे लगे। उनका मधुरतापूर्ण व्यवहार भारत में बार-बार आने को मजबूर कर देता है।

शिविर में कजाकिस्तान से आई नात्रिया ने कहा कि प्रेक्षाध्यान शिविर में चौथी बार आई हूं। यहां पर पुनर्जन्म के बारे में जानकर आश्चर्य हुआ। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि मैं अपनू पूर्व जन्म को जान सकती हूं। इस शिविर ने भारत की यात्रा को यादगार बना दिया है। मैंने कभी ध्यान नहीं दिया था। यहां पर एक अदभूत अनुभव हुआ है।

शिविर के एक अन्य सहभागी ऋषभ दुधोड़िया ने कहा कि जैन साधना पद्धति में रूचि रखता हूं पर कभी ध्यान का प्रयोग नहीं किया था। रिस्तेदारों से अन्तर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान शिविर की सराहना सुनी थी इसलिए इसमें भाग लिया। यहां पर मुझे बहुत कुछ नया मिला है। आचार्य महाप्रज्ञजी के अनेकांतवादी दृष्टिकोण ने मुझे बहुत प्रभावित किया है। मैं उनके विचारों को जन-जन तक पहुंचाने में अपनी शक्ति का नियोजन करूंगा।

गुरु दर्शन करने पहुंचा चैन्नई से संघ

कामनाओं को त्यागो सुख को पाओ : युवाचार्य महाश्रमण

लाडनूं 6 नवम्बर।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि जैसे कपड़ों में कांटे लगने पर एक-एक कर निकाल देते हैं वैसे ही कामनाओं के कांटों को निकाल देना चाहिए। कामना रूपी कांटे को खोजकर जो निकालता देता है वह सुख समृद्धि का साम्राज्य प्राप्त कर लेता है।

वे जैन विश्व भारती स्थित सुधर्मा सभा में उपस्थित श्रद्धालुओं को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि काम आत्मा का शत्रु है, दु:ख को पैदा करने वाला है। युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि हमारी साधना का महत्वपूर्ण आयाम है इच्छाओं को कम करने का अज़्यास करना। इस अवसर पर चैन्नई के तंडियारपे से 215 जनों का संघ गुरु दर्शन यात्रा लेकर पहुंचा। वहां के तेरापंथ ट्रस्ट के मैनेजिंग ट्रस्टी जुगराज नाहर, मंत्री मदनलाल बोहरा संघ के संयोजक तनसुखलाल नाहर, सकून राज परमार नेमीचन्द नाहर 'जोजावर' घीसूलाल बोहरा एवं मदनलाल बोहरा के नेतृत्व में पहुंचे इस संघ की महिलाओं ने गीत के द्वारा भावनाएं प्रस्तुत की।